RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आत्मा की नई उड़ान
आमंत्रण
सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण
महा शिवरात्रि विशेष
|शिवरात्रि विशेषांक | 2020 | पृष्ठ 04 |

बड़ा सच | 84 साल से चल रहा है विश्व परिवर्तन का महान कार्य

आत्मा-परमात्मा के अलौकिक मिलन का स्वर्णिम काल जारी

जैसे दिन के बाद रात्रि आना स्वाभाविक है वैसे सतयुग के बाद कलियुग आता है। यह दोनों ही प्रक्रिया अपने समयानुसार चलती रहती हैं। इसी समयावधि में परमात्मा का अवतरण होता है। सृष्टि पर परमात्मा को अवतरित हुए 84 वर्ष हो चुके हैं। उनसे मिलन मनाकर आज लाखों लोग भाग्य संवार रहे हैं। वर्तमान समय बदलते परिवेश, आतंकवाद सबकुछ बदलाव की ओर ही इशारा कर रही हैं। इस बीच शिव भगवान विश्व का निर्माण कर रहे हैं।

शिव आमंत्रण आबू रोड। आत्मा, परमात्मा, सृष्टि चक्र और परमात्मा से मिलने की आशा और इच्छा दुनिया में लगभग हर एक को होगी। क्योंकि परमात्मा ही इस दुनिया में सबसे श्रेष्ठ और सर्वशक्तिवान हैं। हालांकि परमात्मा का मिलन शास्त्रों में कठिन तप के बाद माना जाता रहा है। कुछ शास्त्रों में एक निश्चित समय बताया गया है। परन्तु अधिकतर प्रमाण यह मिलता है कि जब इस सृष्टि पर आसुरी तांडव और मूल्यों की बलि चढ़ जाती है तो फिर आसुरी साम्राज्य को समाप्त कर नये समाज की स्थापना के लिए परमात्मा का अवतरण होता है। अर्थात आत्मा और परमात्मा के अलौकिक मिलन का अवसर प्रदान होता है।

वर्तमान परिदृष्य: आज यदि हम चारो ओर देखें तो कहीं से भी सभ्य समाज की परिकल्पना साकार होती नहीं दिख रही है। बल्कि मनुष्य, मनुष्य के रूप में एक हैवान और शैतान हो गया है। ऐसे दुष्कृत्य हो रहे है कि मानव की श्रेणी तो दूर राक्षसों की श्रेणी से भी बाहर हो गया है। तमाम तरह की समाज को कलंकित कर देने वाली ऐसी घटनायें हो रही है जिससे मनुष्य की दुनिया में भी भयंकर डर लगने लगा है। नारी का चीरहरण आम हो गया है, बालिकाओं के साथ शैतानियत ने मानवीय रिश्तों को तार-तार कर दिया है। मजहबी हिंसा, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत, उंच नीच का भेदभाव, सम्बन्धों की टूटती मर्यादा की डोर इस बात की ओर संकेत करती है कि ये सब लक्षण मायावी दुनिया के ही लोगों के हैं, जिसमें हम सब हैं।

अधर्मी, आसुरी, कलियुगी दुनिया के महापरिवर्तन का कार्य त्रिमूर्ति, त्रिकालदर्शी स्वयं परमपिता परमात्मा शिव के निर्देशन में चल रहा है

देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी, विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। वे अजन्मा, अकर्ता, अभोक्ता, अविनाशी हैं। परमधाम के निवासी हैं, जिसे हम शांतिधाम, निर्वाणधाम, बैकुण्ठ, ब्रह्मलोक कहते हैं। परमात्मा शिव हजारों सूर्यों से भी तेजोमय हैं। उन्हें इन स्थूल आंखों से देखना संभव नहीं है। उनके साथ की अनुभूति तो की जा सकती है। वे तो पवित्रता के सागर हैं हम पवित्र बने बगैर उनसे अपना संबंध नहीं जोड़ सकते है। जब आत्मा पवित्रता का व्रत लेकर उस सर्वशक्तिवान से ध्यान लगाती है तो उनके साथ की, उनकी शक्तियों की अनुभूति होने लगती है। पिछले 81 वर्षों से आत्मा-परमात्मा के महामिलन का मंगल मेला राजस्थान के माउण्ट आबू में हो रहा है। इसके साक्षी लाखों ब्रह्माकुमार भाई-बहनें हैं।

मंडरा रहे विनाश के बादल

हमेशा से इस बात का जिक्र होता रहा है कि जब-जब अधर्म इस दुनिया पर होगा तब विनाश होगा और नयी दुनिया आएगी। आज विनाश के तमाम चिन्ह हमारे सामने पहाड़ की तरह से खड़े होकर दहाड़ रहे हैं। हथियारों की बारूद पर बैठी दुनिया, एक देश का दूसरे देश के बीच तकरार, भौगोलिक दृष्टिकोण से प्राकृतिक बदलाव मानव जीवन को खतरे की ओर ले जा रही है। यह सब कुछ हम देख और जान रहे हैं। फिर भी आंखें मूंदे पड़े हैं। जो दृश्य दिख रहे है वे केवल इस संसार के सन्दर्भ में ही हैं। अर्थात आध्यात्मिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक सभी सत्तायें चीख-चीख कर समय के बदलाव के लिए पुकार रही हैं।

भगवानुवाच:'मैं ब्रह्मा के तन से देता हूं ईश्वरीय ज्ञान'

गीता, शिवपुराण, महाभारत और यजुर्वेद सभी धर्मग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात स्पष्ट लिखी हुई है। शिवपुराण के कोटी रुद्र संहिता के 42वे अध्याय में लिखा है 'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट होऊंगा' अर्थात् 'समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। परमात्मा शिव ने ही ब्रह्मा मुख द्वारा नई सृष्टि रची। जब ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ, तब शिव ने ब्रह्मा की काया में प्रवेश किया। ब्रह्मा को पुनर्जीवित कर उनके मुख द्वारा नई सृष्टि रचने का कार्य आरंभ किया'। शिव पुराण में यह उल्लेख अनेक बार आया है। साथ ही स्पष्ट लिखा है कि 'सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमात्मा का चिह्न शिवलिंग ही है। सृष्टि के विनाशकाल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंगम प्रगट हुआ जो न घटता था, न बढ़ता था। वह अनुपम, अव्यक्त था। उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ' अर्थात् परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दु:ख से भरे तमोगुणी वातावरण को परिवर्तन किया। यही वजह है कि शास्त्रों में ब्राह्मणों को ब्रह्ममुख वंशावली कहा गया।

परमात्मा के हाथों में जिंदगी

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका
ब्रह्माकुमारीज़

मेरी जिंदगी परमात्मा के हाथों में हैं। जैसे चलाता है वैसे ही मैं चलती हूं। ईश्वर ने जो पढ़ाया है और जो पढ़ा रहा है उसे एक बच्चे की तरह पढ़ती हूं। सदा एक ही बात याद रखती हूं कि मैं कौन (एक आत्मा) और मेरा कौन (एक परमात्मा)। परमात्मा की याद दिनरात दिल में समाई रहती है। सुख-शांति और प्रेम मेरे तीन बच्चे हैं और दिलवाले (परमात्मा) मेरे पति हैं। ये पूरा विश्व मेरा परिवार है। जन्मोजन्म का भाग्य बनाने का ये उचित समय है।

सभी एक ईश्वर की संतान

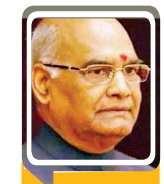

रामनाथ कोविंद
राष्ट्रपति
भारत सरकार

जब हमें शांति नहीं मिलती है तो भटकते हैं और लगता है कि उपासना पद्धति में शांति मिलेगी। लेकिन मंदिर, मस्जिद और गुरूद्वारे में भी हमें शांति, नहीं मिलती है, लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ ने आध्यात्म का जो मार्ग खोजा है, आध्यात्म में ही सच्ची शांति मिल सकती है। हम सब एक ईश्वर की संतान हैं। करीब 80 वर्ष पूर्व इस ईश्वरीय संस्था को आरंभ करने वाले ब्रह्मा बाबा ने आजीवन हीरों को सच्चे मायनों में तराशने का काम किया है।

स्वर्णिम दुनिया की स्थापना

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री भारत
सरकार

ब्रह्माकुमारीज़ का स्वच्छता अभियान से जुड़ने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। संस्थान ने भारत की प्रतिष्ठा को दुनियाभर में पुनः स्वर्णिम दुनिया प्रतिस्थापित करने के लिए काम रही है। यहां की विचारधारा सर्वधर्म मान्य लगती है। स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन का जो इनका मार्ग है वह स्वच्छता के स्थायी संस्कार विकसित करने में महत्वपूर्ण साबित हो रहा है। पर्यावरण संरक्षण, बेटी बचाओ, महिला सशक्तिकरण को लेकर सराहनीय कार्य कर रहे हैं।

शास्त्रों में शिव महिमा...

शिवपुराण के कोटी रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है-

महाभारत के शांतिपर्व श्लोक सं या 337-24-25 में लिखा है कि **'भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया'।** साथ ही लिखा है सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई। वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग के स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया और इस सृष्टि का कल्याण किया। **अवजानन्ति मॉं मूढ़ा मानुशी तनुमाश्रितम, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्।** परमात्मा ने गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि 'मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले लोग मुझे पहचान नहीं सकते'।

परमात्मा हो चुके अवतरित

ब्रह्माकुमारी में आत्मा का सशक्तिकरण और अच्छे इंसान बनाने का काम बहुत ही तेजी से हो रहा है। मेडिटेशन आत्मा की जागृति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है। ब्रह्माकुमारी की ओर से नारी शक्ति के सम्मान में जो कार्य किया रहा है वह इतिहास में लिखा जाएगा।

●रविशंकर प्रसाद
केंद्रीय कानून मंत्री, भारत सरकार

सभी आकर वर्सा लें

हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने हमारी पालना बिल्कुल मां-बाप जैसी की है। परमात्मा के साथ जीवन सफल हो गया। सभी को आकर परमात्मा से अपना वर्सा लेना चाहिए।

●राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी,
अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

जीवन सफल हो गया

शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के तन में आकर नई दुनिया की स्थापना का कार्य शुरू किया वह किसी अजूबे से कम नहीं था। मुझे खुशी है सारा जीवन परमात्मा द्वारा रचे हुए यज्ञ में सफल हो गया।

●राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

परमात्मा के अंग-संग रहा

परमात्मा के बारे में हमने सिर्फ सुना था कि वह इस रूप में आते हैं, ऐसे मिलते हैं। मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे परमात्मा मिलन का ही नहीं, बल्कि हर पल उनके अंग-संग रहने का अवसर मिल रहा है।

●ब्रह्माकुमार निर्वैर
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

नई दुनिया का कार्य जारी

मैंने अपने जीवन में ईश्वरीय शक्ति को महसूस किया है। परमात्मा आ चुके हैं, यह सत्य है। यह कार्य कोई मनुष्य कर ही नहीं सकता। परमात्मा शिव अब प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से नई दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे हैं।

●ब्रह्माकुमार ब्रजमोहन,
प्रधान संपादक, प्यूरिटी मैगजीन, दिल्ली

...प्रतिदिन मिलती हूं

परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझती हूं कि परमात्मा ने स्वयं अपने कार्य में मुझे सहयोगी बनाया। परमात्मा से मैं प्रतिदिन मिलन मनाती हूं। आप भी अपने परमपिता से एक बार जरूर मिलें।

●ब्रह्माकुमारी आशा
निदेशिका, ओआरसी, गुरुग्राम, हरियाणा

अल्लाह को कहा- नूर

मुस्लिम धर्म में मान्यता है कि जीवन में एक बार मक्का मदीना की यात्रा अवश्य करनी चाहिए। इस पवित्र पत्थर का दर्शन मुसलमानों के लिए आवश्यक माना गया है। वो भी निराकार है, जिसकी कोई साकार आकृति नहीं है। उसको ही संग-ए-असवद और अल्लाह कहा। उसे वह लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम वा ज्योतिस्वरूप

एक ओंकार निराकार

सिख धर्म में गुरुनानक देवजी ने कहा है 'एक ओंकार निराकार'। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। 'वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम् है' जिसको काल कभी नहीं खा सकता। यह सब महिमा गुरुवाणी में लिखी हुई है। हमने ज्योतिर्लिंगम कहा उन्होंने निराकार, निर्वैर, सत्यनाम कहा। साथ ही उन्होंने हमेशा ऊपर की तरफ अंगुली करते दिखाया गया है।

श्रीराम ने की पूजा

परमात्मा शिव की पूजा स्वयं श्रीराम ने भी की है, जो वर्तमान समय में रामेश्वरम के रूप में पूजा जाता है। शिव श्रीराम के भी आराध्य हैं। यदि श्रीराम भगवान होते तो उन्हें ज्योतिर्लिंगम की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा की तपस्या करके ही प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए शिव की शक्तिसे ही विजयी हो सकते हैं।

ज्योति स्वरूप की मान्यता सभी धर्मों में, ईश्वरीय शक्ति से बदलेगा जीवन

सभी धर्मों ने स्वीकारी ज्योति की सत्ता

परमात्मा उसे कहते हैं जिसे विश्वभर की मनुष्य आत्माओं ने किसी न किसी रूप में स्वीकार किया हो, जो सर्वमान्य हो, सर्वज्ञ हो, जिसका कोई माता-पिता न हो, सर्वशक्तिमान हो, निर्वैर हो। ऐसे ही देवों के भी देव महादेव परमपिता परमात्मा शिव हैं इनके अस्तित्व को सभी धर्मों ने अलग-अलग रूप से स्वीकारा है।

चाहे भारत हो या फिर दुनिया का कोई भी देश। परमात्मा की व्याख्या परम ज्योति, सूर्य के समान तेजोमय प्रकाश के रूप में ही की है।

सर्व आत्माओं के परमपिता

परमात्मा सर्व आत्माओं के परमपिता हैं, जिन्हें कोई ईश्वर, कोई अल्लाह तो कोई गॉड कहता है। जहां हिन्दू धर्म में निराकार परमात्मा को ज्योतिलिंग के रूप में पूजा जाता है वहीं अन्य धर्मों में भी परमात्मा को निराकार ज्योति स्वरूप माना जाता है।

रोम में प्रियपस कहा...

पारसियों के अग्यारी में होली फायर मिलता है। पारसी जब भारत आए तो जलती हुई अग्नि का अंश लेकर आए। वह आज भी जब नई अग्यारी की स्थापना करते हैं तो जलती हुई ज्योत का अंश स्थापन करते हैं, जो परमज्योति का प्रतीक है। मिस्र में शिव की पूजा सेवा नाम से तथा फैजी देश में शिव को सेवा या सेवाजिया नाम से पूजते हैं। रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहा जाता है। इटली में गिरजा घर में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है।

शिवलिंग पर तीन रेखाएं ही क्यों...?

शिवलिंग पर तीन रेखाएं परमात्मा द्वारा रचे गए तीन देवताओं का ही प्रतीक है। शिवलिंग पर तीन रेखाएं और एक आंख दिखाई जाती है। साथ ही तीन पत्तों का बेलपत्र चढ़ाया जाता है। इसका अर्थ है शिव तीनों लोकों के स्वामी हैं। तीन पत्तों का बेलपत्र परमात्मा के ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता होने का प्रतीक है। वे प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना, विष्णु द्वारा पालना और शंकर द्वारा कलियुगी आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं।

गॉड इज लाइट

जीजस ने परमात्मा को लाइट कहा। उन्होंने कहा 'गॉड इज लाइट', आई एम द सन् ऑफ गॉड। आज भी चर्च में एक बड़ी मोमबत्ती जलाते हैं जो परम ज्योति परमात्मा का ही सूचक है। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया है कि जब हजरत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो उन्हें परमज्योति का साक्षात्कार हुआ, जिसे देख हजरत मूसा ने कहा - जेहोवा। वहीं जापान में तीन फीट की ऊंचाई पर स्टैंड पर एक लाल पत्थर को

शंकर भी लगाते हैं ध्यान

हम शंकरजी को हमेशा ध्यान की मुद्रा में देखते हैं। इससे स्पष्ट है उनके भी कोई आराध्य या देव हैं, जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यानमुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें वह निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं।

श्रीकृष्ण ने भी पूजा

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने भी ज्ञानेश्वर, सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता, सर्व शक्तिवान, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पांडवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों पर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है, क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं।

राजयोग के अभ्यास से आत्मा में बढ़ेगी शक्ति, नर से नारायण बनेगा इंसान

विश्व परिवर्तन का कार्य जारी, नई दुनिया की तैयारी

जब कुछ भी इस सृष्टि पर घटित होता है तो कोई न कोई उसका साक्षी होता है, जो उसे लोगों तक पहुंचा सके। तभी वह घटना सत्य मानी जाती है। परमात्मा ने कहा है कि जब सृष्टि पर धर्म का नाश होगा, तब एक धर्म की स्थापना करने आऊंगा। परमात्मा ने गीता में स्पष्ट कहा है जब-जब इस सृष्टि पर धर्म की अति ग्लानि होगी, तब मैं इस सृष्टि पर आऊंगा। धर्म की अति ग्लानि आपके सामने है। ऐसे समय में परमात्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना का कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में धरा पर परमात्मा का अवतरण हो रहा है। इसे लाखों लोगों ने देखा और अनुभव किया है।

परमपिता परमात्मा का अपना शरीर नहीं होता

कहा जाता है बिन पग चले सुने बिन काना, कर्म करहूं, केहि विधि नाना। सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (जो अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का छोटेस्तर से प्रारम्भ हुआ। संस्था की शुरूआत में मात्र 350 भाई-बहनें ही थे। तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी, जिससे लोगों को यह एहसास हो सके कि यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। परमात्मा को भारत और वंदेमातरम् की गाथा को चरितार्थ करना था। इसलिए माताओं-बहनों के सिर पर ही ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

महापरिवर्तन जारी, नई दुनिया की तैयारी

दुनिया तेजी से बदल रही है, प्रकृति, पुरुष और सत्ता सभी में बदलाव हो रहा है। यह कलियुग के अंतिम चरण और सतयुग के प्रारम्भ का समय है। परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन हो रहा है। तीन सत्ताएं काम कर रही हैं- परम सत्ता (सर्वोच्च सत्ता), मनुष्य आत्माएं और प्रकृति। वर्तमान समय मनुष्यात्माओं के कर्म इतने निम्न स्तर के हो गए हैं कि इनका उल्लेख शास्त्रों में भी नहीं है। इसका सीधा असर चारों ओर बाढ़, सुनामी, भूकंप के रूप में प्रकृति का रौद्र रूप सर्वविदित है। इतिहास साक्षी है जब सृष्टि चक्र में ऐसी स्थिति मनुष्य और समाज की हो जाती है तो विश्व का परिवर्तन अवश्यम्भावी है। यह परिवर्तन परमात्मा के सान्निध्य में होता है। इसमें मनुष्यात्मा और प्रकृति दोनों ही पवित्र और सतोप्रधान बनते हैं। फिर नयी दुनिया का आगमन होता है। आज उसी घड़ी से हम गुजर रहे हैं। एक तरफ आसुरी प्रवृत्तियों का बढ़ता तांडव, दूसरी ओर परमात्म शक्ति द्वारा पूरे विश्व का परिवर्तन दोनों जारी है। यह समय नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी समान बनने का समय है।

चारों युगों में एक बार होता है सर्वोच्च सत्ता का अवतरण

चारों युगों में एक बार ही इस सृष्टि पर परमात्मा का अवतरण होता है। जब यह दुनिया पतित भ्रष्टाचारी बन जाती है। आसुरीयता का बोलबाला हो जाता है। ऐसे समय में परमात्मा को इस सृष्टि पर आकर पुनः नई दुनिया की स्थापना का महान कार्य करना पड़ता है। जब दुनिया भौतिकता की चकाचौंध में इतनी डूब जाती है कि उसके ज्ञान नेत्र बंद हो जाने के कारण सत्य और असत्य का कुछ पता ही नहीं चलता है। तब परमात्मा आकर अपने बच्चों को स्वयं की एवं परमात्मा की पहचान बताते हैं। उनके असली गुणों और कर्त्तव्यों की याद दिलाते हैं। इस तरह आत्मा और परमात्मा का यहां मिलन होता है, जो वर्तमान में जारी है।

परमात्मा का अवतरण अलौकिक और दिव्य

परमात्मा का अवतरण अलौकिक और दिव्य होता है। इसे देखने एवं पहचानने के लिए उसी रूप में आना पड़ता है। वह इसकी विधि भी खुद ही बताते हैं ताकि कोई भी रूकावट और अड़चन पैदा न हो सके। परमात्मा नाना प्रकार के कर्म करते हैं। जहां एक ओर भक्तों को भगवान से मिलने की आस पूरी करते हैं। वहीं आसुरी प्रवृत्तियों का भी नाश करते हैं। वह अपने विविध रूपों द्वारा प्रत्येक बच्चों के पास संदेश भेजते हैं और उन्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर परमात्मा से मिलन मनाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। परंतु बहुत से लोगों को यह यकीन नहीं होता। फिर परमात्मा को अपना परिचय स्वयं देना पड़ता है। यही से शुरू होता है परमात्मा और आत्मा के मिलन का अद्भुत खेल। ऐसे हालात में यह जानना जरूरी होता है आखिर परमात्मा कौन हैं, कैसा स्वरूप है, कहां मिलेंगे, कैसे उनसे संवाद होगा, कहां रहते हैं। हम आत्माओं का असली घर कहा है। यह सारी बातों का ज्ञान होना जरूरी है।

नई दुनिया बना रहे बाबा

शिवबाबा नई दुनिया बना रहे इसमें कोई शक नहीं है। शिवबाबा जो ज्ञान दे रहे हैं, उससे लोगों के जीवन में जो बदलाव आ रहा है वह आश्चर्यजनक है। आज पूरे विश्व में हर प्रकार के और अनेक सोच वाले लोग इस अभियान का हिस्सा हैं। राजयोग के नियमित अभ्यास से आपका जीवन भी खुशियों से भर जाएगा।

●ब्रह्माकुमारी शिवानी

यह ज्ञान बहुत जरूरी है

यहां दिए जा रहे आत्मा के ज्ञान को जीवन में धारण कर हम अपना जीवन दिव्य बना सकते हैं। यहां आत्मा के ज्ञान की स्पष्ट व्याख्या की जाती है। समाज के लिए यह ज्ञान बहुत ही जरूरी है।

●जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ओंकारानंद सरस्वती,
अध्यक्ष, विश्व कल्याण परिषद, दिल्ली

राजयोग से होता विकास

यहां दिया जा रहा ज्ञान हर कसौटी पर खरा है। इसमें अंधविश्वास की कोई बात नहीं। राजयोग मेडिटेशन से मन का विकास होने लगता है। जिस निःस्वार्थ भाव से संस्था कार्य कर रही है वह एक दिन जरूर मिशन में सफल होगी।

●दया चौधरी
न्यायमूर्ति, हाईकोर्ट, पंजाब-हरियाणा

जानने का प्रयास करें

यहां के पवित्र वातावरण में आत्मा और परमात्मा को जोड़ने वाली विद्या को ही राजयोग कहते हैं। यही सनातन सत्य है, शाश्वत है। सभी धर्मावलंबियों को इसे जानने का प्रयास करना चाहिए।

●स्वामी विवेकात्मानि,
संचालक, विश्व अहिंसा संघ, दिल्ली

बहुत बड़ा भाग्य है...

यहां ईश्वरीय शक्ति के सान्निध्य में काम हो रहा है। मुझे तीन बार आने का अवसर मिला है। यह हमारे लिए अति सुखद है। बाबा से भी मिलने का अवसर प्राप्त हुआ है। यह बहुत बड़ा भाग्य है।

●करुणाकरन मंते,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, बौद्ध गया महाबोधि बिहार, ऑल इंडिया कमेटी

शिव के साथ क्या है रात्रि का संबंध

ये बड़ा सवाल है कि विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन परमात्मा शिव की जयंती को जन्मदिन न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है, आखिर क्यों? इसका अर्थ है परमात्मा जन्ममरण से न्यारे हैं। उनका किसी महापुरुष या देवता की तरह शारीरिक जन्म नहीं होता है। वह अलौकिक जन्म लेकर अवतरित होते हैं। उनकी जयंती कर्तव्य वाचक रूप से मनाई जाती है। उनका अवतरण विषय- विकारों की कालिमा से लिप्त अज्ञान निद्रा में सोए मनुष्य को जगाने के लिए होता है। जब-जब इस सृष्टि पर पाप की अति, धर्म की ग्लानि और पूरी दुनिया दुःखों से घिर जाती है तो गीता में किए अपने वायदे अनुसार परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं और पुनः सहज राजयोग की शिक्षा देकर सतधर्म की स्थापना का दिव्य करते हैं।

सत्य | शिव की रचना हैं शंकर,ब्रह्मलोक के हैं वासी

शंकर के भी परमात्मा हैं 'शिव'

शिव और शंकर में महान अंतर है। शिवलिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा है। परमात्मा निराकार ज्योति स्वरूप है। शिव का अर्थ है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ है चिह्न। अर्थात् कल्याणकारी परमात्मा को साकार में पूजने के लिए शिवलिंग का निर्माण किया गया। शिवलिंग को काला इसलिए दिखाया गया क्योंकि अज्ञानता रूपी रात्रि में परमात्मा अवतरित होकर अज्ञान-अंधकार मिटाते हैं। परमपिता परमात्मा शिव देवताओं एवं समस्त मनुष्यात्माओं के पिता हैं। उनका दिव्य अवतरण होता है। वे अजन्मा, अभोक्ता, अकर्ता और ब्रह्मलोक के निवासी हैं। शिव और शंकर में उतना ही अंतर है जितना कि पिता और पुत्र में। शंकर का आकारी शरीर है। शंकर परमात्मा शिव की रचना है। परमात्मा शिव ने शंकर को इस कलियुगी सृष्टि के विनाश के लिए रचना की है। यही वजह है कि शंकर हमेशा शिवलिंग के सामने तपस्या करते हुए दिखाए जाते हैं। वह हमेशा ध्यान की मुद्रा में रहते हैं। यदि शंकर स्वयं भगवान होते तो उन्हें ध्यान करने की क्या जरूरत है? ध्यानमग्न शंकर की भाव-भंगिमाएं एक तपस्वी के अलंकारी रूप हैं। शंकर और शिव को एक समझ लेने के कारण हम परमात्म प्राप्तियों से वंचित रहे। अब पुनः अपना भाग्य बनाने का मौका है।

परमात्मा ज्योति स्वरूप हैं: स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद ने भी अपने शिव स्त्रोत में शिव की वंदना इन शब्दों में की है -सृष्टि की स्थापना, विनाश और पालन करने वाले हैं, जो अपरंपार महिमा वाले हैं। उन पारलौकिक परमात्मा को मेरे जीवन की श्रद्धा-ज्योति समर्पित है। परमात्मा शिव निराशा और अंधकार से सदा परे ज्योतिस्वरूप हैं। उन्हें अखण्ड प्रभु-स्मृति द्वारा ही अनुभव किया जा सकता है। वे ही कलियुगी, विकारी सृष्टि के विकार मिटाने वाले प्रभु हैं। उन्हें मेरा प्रणाम है।

बच्चे कहकर बुलाया...

जब मैं पहली बार माउंट आबू पहुंचा तो बाबा ने मुझे बच्चा कहकर बुलाया। मैंने उसी समय अपना जीवन समर्पित करने का निश्चय कर लिया। आज भी प्रतिदिन ईश्वरीय शक्ति से मिलन होता है।

●ब्रह्माकुमार करुणा,
प्रबंध निदेशक, पीस ऑफ माइंड चैनल, आबू रोड

परमात्मा से संवाद का जरिया है राजयोग

जी हां, यह सच है। आप भी परमपिता शिव परमात्मा से मंगल मिलन मना सकते हैं। इसके लिए न तो गाड़ी चाहिए और न घोड़ा है। बस जरूरत है तो नए परिवर्तन की ओर पहल करने की। राजयोग मेडिटेशन वह माध्यम जिसके जरिए हम स्वयं को आत्मा समझ परमात्मा से मन के तार द्वारा मिलन मना सकते हैं। यह विधि बहुत ही सरल और आसान है। इसके अलावा आपको इसे सीखने के लिए न रुपए खर्च करने की जरूरत है और न ही घर बार छोड़ने की। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सेवाकेंद्र पर जाकर आप परमात्मा से मंगल मिलन मनाने की इस विधि को बिना कोई शुल्क दिए सीख सकते हैं। यह सच है कि आप और हम देह नहीं एक आत्मा हैं। शरीर तो एक वस्त्र की तरह है जो हमें परमात्मा ने कर्म करने के लिए दिया है। जब आत्मा शरीर से निकल जाती है तो पांच तत्वों से बना यह शरीर इसी पृथ्वी लोक पर पांच तत्वों (जल, अग्नि, आकाश, जमीन और वायु) में समां जाता है। आत्मा और परमात्मा का स्वरूप एक जैसा ज्योतिर्बिन्दु है। परमात्मा ही आत्मा के वास्तविक पिता हैं।

एक दृष्टि ने जीवन बदला

संस्था के संपर्क में आने से ही समस्याओं का अपने आप समाधान होने लगा। परमात्मा की शिक्षा एवं उनके महावाक्य बिल्कुल सहज और असाधारण हैं। उनकी एक दृष्टि जीवन बदल देती है।

●ब्रह्माकुमार मृत्युंजय,
कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू

ईश्वर हमारे पिता भी हैं

हां, मैं ईश्वर से साक्षात् मिला हूं। वह ईश्वर के साथ हमारे पिता भी हैं। अपने परमपिता से मिलना एक सुखद अनुभूति है। यह शब्दों में बयां नहीं की जा सकती। परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नयी दुनिया बना रहे हैं, यह सच है।

●एमवी रमेश, रजिस्टार,सुप्रीम कोर्ट

परमधाम निवासी हैं

मैंने स्वयं परमात्मा की शक्तियों को अनुभव किया है। यह सच है कि परमात्मा अवतरित हो चुके हैं। वह इस संस्था के माध्यम से नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। भगवान सर्वव्यापी नहीं हैं, बल्कि परमधाम के निवासी हैं।

●वेद व्यास
पूर्व वैज्ञानिक, भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर

परमात्मा आ चुके हैं

अपने वायदे के अनुसार परमात्मा धरती पर अवतरित हो चुके हैं। वह स्वयं माता-पिता हमारी पालना कर रहा है। राजयोग से उनकी शक्ति को फील कर सकते हैं।

●डॉ.ममता जैन, एडी, आरके हॉस्पिटल दिल्ली

सांसों में परमात्मा बसा

स्वयं परमात्मा ने 16 वर्ष की आयु में अपने विश्व परिवर्तन के कार्य में लगा लिया। मेरा अनुभव है यदि आप परमात्मा को अपना बना लो तो आपकी पालना वही करेगा। हर सांस में परमात्मा की सेवा और याद दौड़ती है।

●राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मुन्नी,
कार्यक्रम प्रबंधक, शांतिवन,आबू रोड

एक परमात्मा का मिल रहा संदेश

भारत विश्व गुरु था और फिर से बनने जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की इसमें अहम भूमिका है। यहां से परमात्मा एक है का संदेश दिया जा रहा है। युवा समाज विकास के केन्द्र बिन्दू हैं। इनका सशक्तिकरण ही नया समाज का आधार बनेगा।

● ओम बिड़ला, स्पीकर, लोकसभा दिल्ली।

स्वयं को खोजना ही परमात्मा को पाना है।

राजयोग मेडिटेशन और अध्यात्म का संदेश विश्व के 140 देशों में फैल रहा है। माधव सेवा ही मानव सेवा है। हमारा संस्कार रहा है। स्वयं को खोजना ही आध्यात्म है। दुनिया को शांति की जरूरत है।

● वेंकैया नायडू , उपराष्ट्रपति, भारत।

दुनिया को सबसे ज्यादा शांति की जरूरत

ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान सबसे ऊंचा है। ये सीधे परमात्मा से मिलन कराता है। राजयोग मेडिटेशन परमात्मा से जोड़ता है। यदि खुद के अन्दर शक्ति शक्ति का विकास चाहिए तो राजयोग ध्यान को अपनाना पड़ेगा।

● प्रतापचंद्र सारंगी, पशुधन विकास, लघु तथा मध्यम उद्योग मंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

मन की आसुरी वृत्तियों को समाप्त करने की जरूरत

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पूरे विश्व में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रहा है। यहां दिए जाने वाले ज्ञान से मन की आसुरी वृत्तियां समाप्त होती हैं। इससे ही परमात्मा के समीप जा सकेंगे।

● फग्गन सिंह कुलस्ते, केन्द्रीय इस्पात राज्यमंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

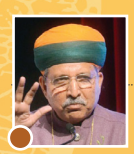

जीवन में श्रेष्ठता के लिए राजयोग जरूरी

ब्रह्माकुमारीज़ का ज्ञान, विज्ञान और अध्यात्म का संगम है। इससे ही मानव का विकास होगा। अन्तर्मन में ज्ञान की ज्योति ही परमात्मा से मिला सकती है। इसे जीवन में अपनाएं।

● अर्जुनराम मेघवाल, केन्द्रिय जल संसाधन मंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

आध्यात्मिक शक्ति हमें सही दिशा दिखाती है

राजयोग से जीवन में असीम शांति मिलती है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का स्लोगन है। आध्यात्मिक शक्ति ही हमे सही दिशा दिखा सकती है।

● जी. कृष्ण रेड्डी, केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार, दिल्ली

माउंट आबू में हर साल दुनियाभर से पहुंचते हैं लाखों लोग...

प्रभु मिलन का महासंगम

दुनियाभर के 142 देशों से भाई-बहनें परमात्मा से मंगल मिलन मनाने हर साल माउंट आबू पहुंचते हैं।

पिछले 84 वर्ष से जारी है मिलन...

पूरी दुनिया में केवल एक ही ऐसी जगह है जहां आत्मा-परमात्मा के मिलन का साक्षात् महाकुम्भ होता है। यह सच है, यह मिलन पिछले 84 वर्षों से लगातार जारी है। ज्ञान की गंगा में ज्ञान स्नान कर वे सभी लोग देवत्व की राह पर चल पड़े हैं। इस महामिलन के साक्षी किसी भी भाई-बहन से पूछें तो सभी का एक ही उत्तर मिलता है, नर से नारायण व नारी से लक्ष्मी बनना है। इतना ऊंचा मुकाम है, फिर भी इसकी सफलता उनके नयनों में साफ झलक जाएगी।

दादा लेखराज को बनाया सारथी...

सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (अभी पाकिस्तान में) में इस मिलन का एक छोटे स्तर से प्रारम्भ हुआ। क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। उन्होंने माताओं-बहनों के सिर पर ज्ञान का कलश रखा और इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

14 वर्ष तक कराई कठिन तपस्या...

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने ब्रह्मा वत्सों की भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं- बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप-त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म व परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही हैं।

142 देशों में फैला ईश्वरीय संदेश

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू आई। माउण्ट आबू से ही विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ। वर्ष 81 पूर्व प्रारंभ हुई यह संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। संस्था के विश्वभर में 142 मुल्कों में करीब नौ हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्रों से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना तथा उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा जारी है।

परमात्मा ने स्वयं दिया अपना परिचय

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आयी। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं आनंद स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, ज्योति स्वरूप हूं। तुम्हें नई दुनिया की स्थापना करना है। इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

प्रेम से रहना सिखाया

अपने स्थापना के 84 वर्ष पूरे कर चुकी ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का स्वर्णिम इतिहास सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणादायी है। संस्था ने आज के तनावयुक्त वातावरण में शांति व प्रेम से रहना सिखाया है। यह ज्ञान समाज के लिए बहुत जरूरी है।

● सुभाष घई
फिल्म निर्माता, मुंबई

मेरा जीवन बदल गया

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से जुड़कर मेरा पूरा जीवन ही बदल गया। यह सत्य है परमपिता परमात्मा शिव का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। वे सहज राजयोग की शिक्षा देकर हम आत्माओं को पावन बना रहे हैं।

● सुरेश ओबेराय
प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता, मुंबई

यहां, सभी अभिनयकर्ता

साकार में परमात्मा से मिलकर लगता है कि जो पाना है वो मैंने पा लिया है। मेडिटेशन से आत्मिक शांति मिलती है। परमात्मा ने जो ज्ञान दिया उससे पता चला कि हम सभी इस सृष्टि रंगमंच पर अभिनयकर्ता हैं और हमें अपना अभिनय खुशी से करना है।

● ग्रेसी सिंह
फिल्म अभिनेत्री, मुंबई

ईश्वर का सत्य दे रहे

यहां ईश्वर और उसकी रचना का सत्य ज्ञान दिया जा रहा है। यहां सिखाए जा रहे राजयोग के महत्व को मैंने खुद जीवन में अनुभव किया है। परमात्म से मिलन मनाकर मैं स्वयं को धन्य समझता हूं।

● धनंजय लांबे
वरिष्ठ पत्रकार, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▸ ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▸ 9414172596, 9413384884, 9179018078
Email ▸ shivamantran@bkivv.org
▸bkkomal@gmail.com

● प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादक: प्रो. कमल दीक्षित ● संपादक: ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● RNI No.: RJHIN/2013/53539